ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

मीरा की माधुर्य भक्ति

कंचन अग्रावत, शोधार्थी, हिंदी विभाग, मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार, चित्तौड़गढ़, राजस्थान
प्रो. सुशीला लड्ढ़ा, निर्देशक, मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार, चित्तौड़गढ़, राजस्थान
डॉ. प्रेम सिंह, सह निर्देशक, मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार, चित्तौड़गढ़, राजस्थान

भक्तशिरोमणि मीरा कृष्ण के सगुणरूप की उपासिका थी। उनकी भक्ति माधुर्य भाव की है। मीरा ने सम्पूर्ण तन्मयता से अनीर्विल और विशुद्ध प्रेम की साधक गोपी भाव को आत्मसात् किया था । मध्यकाल में कान्तभाव भक्ति की अपनी एक विशेष प्रतिष्ठा थी । यहाँ तक की कबीर जैसे अक्खड़ संत भी इस भाव से अभिभूत होने से स्वयं को रोक नहीं पाए। एक स्त्री जिस प्रकार अपने पति के प्रति पूर्ण समर्पण एवं राग भाव रखती है, उस तरह का समर्पण भाव अन्य किसी प्रकार के रागात्मक सम्बन्ध में परिलक्षित नहीं होता। यदि कोई पुरुष स्त्रीभाव से कान्तभाव की भक्ति करता तो उसे स्त्रीभावों का अस्वाभाविक आरोपण करना पड़ता है । वह स्त्री से जुड़े अनुभवों के आधार पर ईश्वरीय प्रेम और विरह का चित्रण करता है। वहीं स्त्री अपने अराध्य से अत्यन्तः स्वाभाविक तरीके से जुड़कर आत्यानुभूति करती है, उसे अपने पुरुषोत्तम का सान्निध्य प्राप्त करने के लिए अधिक कल्पना की आवश्यकता नहीं पड़ती है ।

मीरा की माधुर्य भक्ति निराले ढंग की प्रेम–साधना थी । क्योंकि मीरा स्वयं स्त्री थी, उन्हें स्त्री–सुलभ आत्मसमर्पण कहीं से प्राप्त नहीं करना था वह उन्हें स्वतः प्राप्त था । ''मीरा ने अन्य भक्त कवियों की भाँति कृष्ण के प्रति ब्रज–सुन्दरियों द्वारा प्रदर्शित विविध भावों का वर्णन नहीं किया और न अपने ऊपर स्त्रीभाव का कृत्रिम या काल्पनिक आरोपण कर उनके समान चेष्टाओं का प्रदर्शन किया है।[1]

' मीरा की श्रीकृष्ण के प्रति यह प्रेम, अनुरक्ति, आदि भाव सहज व स्वाभाविक है। यही सहज स्वाभाविक प्रेम का मधुर भाव या सहजकान्ता भाव है। इस भाव में भक्त अपने आराध्य को अपना पति, प्रेमी तथा सर्वस्व मानता मीरा कहती है यह सारा जग मिथ्या है, केवल श्रीकृष्ण ही सत्य सनातन हैं। इस पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त जो है वहीं मेरा वर है, वह अविनाशी ही मेरा पति है ।

मोहन लागत प्यारा राजाजी, मोहन लागत प्यारा।
जिनकी कला से हालत चालत, धरण अकास अधारा।
जिनको कल में सब जग भूल्यों ये ही पुरुष हैं न्यारा ।।
तुम भी झूठे, हम भी झूठे, झूठे सब संसारा ।
नारि पुरुष के सम्बन्ध झूठे, तो फूटया हिया तुम्हारा।।
तुम ही कहो अरधंगा हमारी, हम हूँ लगाया कारा ।
कोटि ब्रह्माण्ड में व्यापि रहयो है, सो निज वर हैं हमारा ।। 2

मीरा स्वयं को राधा या गोपी का रूप समझती है। उनके अनुसार वह जन्म–जन्मान्तर से श्रीकृष्ण के चरणों की दासी है अतः उनका प्रेम बहुत ही प्राचीन है। मीरा कहती हैं कि उन्होंने स्वप्न में श्रीकृष्ण से विवाह किया है

किन्तु फिर भी वह लोगों में अभी भी अविवाहित है।
मोती चौक पुरावाँ णेणाँ, तण मण डाराँ वारी।
चरण सरण री दासी मीराँ, जणम जणम री क्वाँरी।।[3]

मीरा की भक्ति में स्वकीया और परकीया दोनों भावों का समावेश है। मीरा की मधुरा भक्ति में प्रेयसी और परिणीता दोनों भावों का अद्भुत सामंजस्य है। मीरा का आदर्श प्रेरणा स्रोत ब्रज की गोपियाँ थी। कुछ लोग तो उन्हें ललिता नामक किसी ब्रज गोपी का अवतरण भी मानते हैं । मीरा ने अपने गिरधर नागर के प्रेम में तल्लीन होकर अन्य समस्त लौकिक सम्बन्धों का त्याग कर दिया था। गोकुल की गोपियों का प्रेम शुद्ध परकीया भाव का प्रेम था । वहीं मीरा कभी तो स्वकीया की भाँति अपने गिरधर को पति मानती है तो कभी गोपियों की तरह परकीया के समान अपने भावों को प्रकट करती है। डॉ. प्रभात ने मीरा के गोपी होने का वर्णन करते हुए कहा है कि ष्मीरा ने गिरधर के प्रेम में समस्त लौकिक सम्बन्ध छोड़ दिये थे। जब से उनके नयन श्मदनमोहन की निपट बंकट छवि में अटके थे, तब से वे श्खान–पान सुध–बुध बिसार कर उन्हीं के ध्यान में लीन रहती थी। गोपियों के समान ही उनके हृदय में विरहानल लग गई थी और वे पात की तरह पीली पड़ गई थीं । उन्होंने प्रणय के इस दुस्तर पथ को नहीं त्यागा। अतः गोपियों के समान लोक–लाज, कुल की मर्यादा त्याग कर श्याम–सुन्दर पर जीवन वारने वाली

मीरां को अगर भक्त–हृदय गोपिका का अवतार मानने लगा हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।''[4]

लोक दृष्टि में मीरा का श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम स्वकीया भाव का प्रेम नहीं था। इसलिये उनके इस प्रेम भाव के पथ को बहुत बाधित किया गया। उनके श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम के पागलपन को उनके परिवारजन भी नहीं पहचान सकें। उन्हें कई प्रकार से प्रताड़ित किया जाने लगा व उन्हें 'कुलनासी' व 'कलंकी' कहा जाने लगा। परन्तु मीरा को इसकी चिन्ता नहीं थी उन्हें तो यह बदनामी भी बहुत प्यारी व मीठी लगती थी–

राणा जी म्हाने या बदनामी लागे मीठी।
कोई निन्दों कोई बिन्दों, मैं चलूँगी चाल अपूणी।
साँकडली सेरयां जन मिलिया क्यूँ कर फिरूँ अपूठी।
संत संगति मा ग्यान सुणैछी दुरजन लोगां ने दीठी।
मीरां रों प्रभु गिरधरनागर, दुरजन जले जा अंगीठी।।[5]

मीरा को अपने पारिवारिक जीवन में केवल अवहेलना ही नहीं सहन करनी पड़ी, बल्कि संघर्ष का भी सामना करना पड़ा। केवल राजा ही नहीं मीरा की सखियाँ भी उसे अपने सीरे से समझाती थी कि तू इस वैराग्य की भावना का त्याग कर दें और राजघराने की स्त्री की तरह जीवन यापन कर। तब मीरा कहती है–

राजा बरजै राणी बरजै, बरजै सब परिवारी।
कुँवर पाटवी सो भी बरजै और सहेल्या सारी।
सीस फूल सिर ऊपर सोहै, बिंदली शोभा नारी।
साधन के ढिंग बैठ–बैठ के, लाज गमाई सारी।
नित प्रति उठि नींच घर जाओ, कुल को लंगावो गारी।[6]

तब मीरा कहती है कि उनकी राह में चाहे कोई कितने ही कष्ट पहुँचाये, बाधा उत्पन्न करें, पर वें तो अपने गिरधर के ही गुण गायेंगी। उन्हीं का नमन वन्दन करेंगी। वे कहती हैं –

माई म्हां गोविन्दा गुण गास्यां।
यो संसार बीड़रो कांटो, गेल प्रीतम अटकास्यां।।[7]

मीरा श्रीकृष्ण के प्रेम की दीवानी थी। उन्हें केवल अपने गिरधर नागर से लगंन थी। उनके इस प्रेम में राजपरिवार के लोग बाधक थे अतः उनके इस प्रेम मार्ग पर अनेकों बाधाएँ पहुँचाई गई । परन्तु उनका प्रेम उतनी ही तीव्रता से बढ़ता गया। मीरा कहती है जिस प्रकार अग्निदाह में कंचन और शुद्ध होकर निखर जाता है उसी प्रकार प्रभु के प्रति निर्मल प्रेम की अग्नि में उनका प्रेम और भी पवित्र होकर निखर गया है–

जैसे कंचन दहत अगिन में, निकसत बारावाणी।
लोकलाज कुल काण जगत की, दह, बहाय जसपाणी।।[8]

मीरा के पदों में भक्ति से सम्बन्धित ''नारदभक्ति सूत्र''[9] में उल्लिखित सभी ग्यारह आसक्तियाँ गुणमाहात्म्यासक्ति, रूपासक्ति, पूजासक्ति, स्मरणासक्ति, दास्यासक्ति, कान्तासक्ति, सख्यासक्ति, आत्मनिवेदन वात्सल्यासक्ति, तन्मयतासक्ति, परमविरहासक्ति का वर्णन उलब्ध होता है। गुणमाहात्म्यासक्ति का एक पद प्रस्तुत है –

मण थे परस हरि रें चरण।। टेक।।
सुभग सीतल कँवल कोमल, जगत ज्वाला हरण।
इण चरण प्रहलाद परस्याँ, इन्द्र पदवी धरण।
इण चरण ध्रुव अटल करस्याँ, सरण असरण सरण।
इण चरण ब्रह्माण्ड भेट्याँ, नखसिखाँ, सिरी धरण।
इण चरण कालियाँ नाथ्याँ, गोप– लीला करण।
इण चरण गोबरधन धार्यों, गरब मध्वा हरण।
दासि मीराँ लाल गिरधर, अगम तारण तरण ।।[10]

मीरा की नवधा भक्ति–

मीरा की भक्ति में श्रीमद्भागवतपुराण में वर्णित नवधा भक्ति के भी सभी अंग प्रकट हुए हैं ।

श्रवणं कीर्तनं विष्णोस्मरणं पादसेवनं।
अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम।।[11]

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

भागवतानुसार श्रवणं, कीर्तन, स्मरण, पूजन, इष्टदेवता की सेवा, दास्य सख्य, दर्शन और आत्मनिवेदन यह नवधा भक्ति के अंग माने जाते हैं । मीरा ने इस नवधा भक्ति को स्वीकार करते हुए अपने पदों में इनका वर्णन भी किया है। मीरा अपनी सखी मिथुला से श्रीकृष्ण की पूजा अर्चना, भोग आदि की तैयारी करने का कहते हुए कहती है–

मिथुला कर पूजन की त्यारी ।

धूप दीप नैवेध आरती सब ही सौजँ ले आ री ।
बहु विध सूँ पकवान बना कर करो भोग की त्यारी ।
जीमैलो म्हारो पिया गिरधर, साधाँ ने बेग बुला री ।
(मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणाँ पर बलिहारी) । ।[12]

वल्लभमत में भागवतानुसार वर्णित नवधा भक्ति के अतिरिक्त दसवीं श्प्रेम– लक्षणाश भक्ति भी कही गई है। वल्लभमत में प्रेमलक्षणा भक्ति को मुख्य माना गया है क्योंकि इसी से भगवान के स्वरूपानन्द की प्राप्ति होती है। सूरदास जी ने नवधा भक्ति और दसवीं प्रेमलक्षणा भक्ति का उल्लेख इस प्रकार किया हैं

–श्रवण कीर्तन स्मरण पादरत, अरचन बंदनदास।
सख्य और आत्मनिवेदन, प्रेमलक्षणा जास।।[13]

मीरा के पदों में प्रेमलक्षणा भक्ति का आधिक्य है । क्योंकि मीरा ने श्रीकृष्ण की भक्ति स्वयं को उनकी स्वकीया मानकर की हैं। मीरा की भक्ति प्रमुख रूप से कान्ताभाव की है। मीरा कृष्ण को अपना अविनाशी पति व स्वयं को उनकी परिणीता मानती हैं। वे कहती हैं कि कृष्ण के साथ उनका विवाह स्वप्न में ही हो गया था। यह एक आध्यात्मिक श्विवाह है। इस तरह के आध्यात्मिक विवाह का चित्रण कबीरदास जी ने भी किया था । ''दुलहिन गावहु मंगलाचार हमारे घर आये राजाराम भरतार यह प्रसिद्ध पद कबीरदास का इसी तरह का पद है। मीरा कहती है कि स्वप्न में दूल्हा ब्रजनाथ थे व उनके साथ छप्पन करोड़ बाराती आये थे ।

स्वप्न में ही तौरण बाँधा गया व स्वप्न में ही पाणिग्रहण संस्कार हुआ।
पूर्व जन्म का भाग्य ही था कि मीरा को अचल सौभाग्य की प्राप्ति
हुई ।

माई म्हाँने सुपणों में परण गया गोपाल।
अंग अंग हल्दी में करी जी सुधे भीज्यो गात।
माई म्हाँने सुपणें में परण गया दीनानाथ।
छप्पन कोट जहां जान पधारे दूल्हों श्री भगवान ।
सुपणे में तोरण बांधियो जी सुपणे में आई जान ।
मीराँ को गिरधर मिल्या जी पूरब जन्म के भाग ।
सुपणे में म्हांने परण गया जी हो गया अचल सुहाग।।[14]

मीरा को शास्त्रों का ज्ञान था या नहीं ? यह विषय विचारणीय नहीं है क्योंकि मीरा पर शोध करने वाले विद्वानों का इस विषय में अलग–अलग मत हैं । परन्तु ''मीरा ने शास्त्रों का अध्ययन करके फिर उसके अनुकूल अपने भावों को सचेष्ठ रचा होगा ऐसा अनुमान लगाना उचित नहीं होगा। लेकिन भक्तिभाव की अभिव्यक्ति के जितने भी माध्यम अथवा तरीके थे उनको उन्होंने अपने समकालीन भक्त कवियों से अवश्य जाना या समझा होगा।''[15]

माधुर्य भक्ति के प्रमुख अंग–

मीरा यूँ तो बाल्यकाल से ही भगवान् श्रीकृष्ण की परम् भक्त थी। परन्तु अल्पायु में वैधव्य का अभिशाप मिलने से मीरा का जीवन. विषाद में डूब गया। अपार विषाद में डूबी मीरा ने स्वयं का मन गिरधर नागर की ओर मोड़ लिया। मीरा का आदर्श गोपियाँ थी उन्होंने परकीया रूप में श्रीकृष्ण की आराधना प्रारम्भ कर दी। मीरा का श्रीकृष्ण के परकीया होने के नाते उनके मार्ग में अनेक बाधाएँ आने लगी। पारिवारिकं प्रतिष्ठा और राजपरिवार ने उनका मार्ग हर प्रकार से रोका, उनका विरोध किया, कई प्रकार की यातनाएँ दी, प्रताड़ित किया, परन्तु मीरा को कोई भी उनके भक्ति पथ से रोक नहीं पाया। परिवारजनों के इस व्यवहार से मीरा के मन में दुःख और समाज के प्रति रोष उत्पन्न हो गया। मीरा के पदों में समाज की अन्यायपूर्ण स्थिति का कई बार विवरण मिलता है। मीरा ने संतों की संगति को श्रेष्ठ बताते हुए उनके द्वारा निर्दिष्ट नैतिक मूल्यों का अनुकरण किया। वे कहती हैं कि –

कोई निन्दों कोई बिन्दों. म्हें तो गुण गोविन्द का गास्याँ।

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

जिण मारग म्हारौँ साध पधारै, उण मारग म्हे, जास्याँ।।
चोरी न करस्याँ जिव न सतास्याँ, कोई करसी म्हारों कोई।
गज से उतर के खर नहिं चढ़स्या, ये तो बात न होई।।[16]

संसार की नश्वरता को समझने के पश्चात् मीरा ने अपना सम्पूर्ण हृदय भगवान् की और अग्रसर कर लिया । मीरा के अन्तर्मन में वैराग्य छा गया और
वे इस नश्वर समाज के बंधनों से मुक्त होकर नित्य श्रीकृष्ण की भक्ति में डूबते हुये कृष्ण को पति रूप में मानने लग गयी । ''माधुर्य भक्ति के तीन प्रमुख अंग माने गये हैं — (1) रूप वर्णन (2) शृंगार (विरह) वर्णन, (3) आत्म
समर्पण ।''[17] मीरा की माधुर्य भक्ति का प्रमुख अंग सौन्दर्य वर्णन हैं। उन्होंने अपने प्रियतम (कृष्ण) के अनुपम सौन्दर्य का अनुभव कर उस सौन्दर्य का वर्णन भी किया हैं।

(1) रूप वर्णन :–

कान्तभाव में प्रियतम् का प्रिय के रूप के प्रति आकर्षण होना स्वाभाविक प्रवृत्ति है। मीरा ने भी श्रीकृष्ण की भक्ति कान्तभाव से की है, इसलिये उन्होंने अपने आराध्य के रूप–सौन्दर्य का रसपान कर अपने पदों में उसका वर्णन किया है। मीरा श्रीकृष्ण के रूप–सौन्दर्य में इतना मग्न हो जाती है कि वे किसी की परवाह नहीं करती। चाहे कोई मना करे या नाराज हो । वे कहती

थारो रूप देख्यां अटकी।
कुल कुटुम्ब, सजन सकल, बार–बार हटकी।
विसरय, ना लगन लगां, मोर मुगट नट की।
म्हारो मन मगनस्याम, लोक कहयों भटकी।।[18]

मीरा ने कृष्ण की भक्ति करते हुये उनके युवा रूप का, नेत्रों का, साँवले रूप का, पितांबर वस्त्रों का, मोर मुकुट का, विभिन्न प्रकार के आभूषणों का,
बाँसुरी का, बालरूप आदि का अपने पदों में कई जगह विवरण किया हैं। कृष्ण
नेत्रों का वर्णन कहते हुए मीरा कहती है –

हे माँ बड़ी बड़ी आँखियन वारो, साँवरो मो तन हेरत हँसिके ।
भौंह कमान बान बाँके लोचन, मारत हियरे कसिके ।।[19]

श्रीकृष्ण की विशेष प्रिय बाँसुरी का वर्णन करते हुए मीरा कहती है –

भई हो बावरी सुन के बाँसुरी, हरि बिनु कछु न सुहाये माई।
स्त्रवण सुनत म्हारी सुध बुध बिसरी लगी रहत तामें मन की गाँसुरी
नेम धरम कोण कीनी मुरलिया कोण तिहारे पासु री ।
मीराँ के प्रभु बस कर लीने सप्त ताननि की फाँसुरी ।।[20]

(2) शृंगार वर्णन–

मीरा के पदों में श्रृंगार पद के संयोग व वियोग दोनों पक्ष पाए जाते हैं, परन्तु उनमें विप्रलम्भ शृंगार की प्रधानता हैं । ''मीरा साहित्य में संयोग पक्ष सम्बंधित जो पद मिलते हैं वे प्रेम की उस चरमावस्था के द्योतक है, जिनमें अनन्त वियोग–दुःख अनन्त संयोग–सुख में परिणत हो जाता है और सर्का– परम् प्रियतम की अपूर्व माधुरी का साक्षात्कार होने लग जाता है।''[21]
मीरा के साहित्य में माधुर्यभाव सर्वोत्कृष्ट है । अतः मीरा की पदावलियों में माधुर्यभाव के संयोग व वियोग दोनों ही पक्षों का बड़ा ही भावपूर्ण एवं मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है।

मीरा का संयोग वर्णन –

मीरा के काव्य में संयोग श्रृंगार का वर्णन भी मिलता है यद्यपि वह अल्पकालीन है। संयोग जन्य प्रणय के तीन सोपान माने गये हैं— (1) प्रथम सोपान में परिचय और आकर्षण, (2) द्वितीय सोपान में आत्मीयता और साहचर्य और (3) तृतीय सोपान में एकान्त संयोग रस अथवा तादात्म्य रहता है ।[22] मीरा के संयोगकाल में मिलन, छेड़छाड़, त्यौहारों का वर्णन, मिलन के समय आनन्दोल्लास जैसे कई संयोग–सुख से जन्य पदों का विवरण मिलता है।
संयोगकाल में मिलन का वर्णन करते हुए मीरा कहती है –

मैं गिरधर रंग राती, सैयां मैं गिरधर रंग राती ।
पचरंग चोला पहिर सखी मैं, झिरमिट खेलन जाती।।[23]

मिलन के बाद कामनाओं की पूर्ति और व्यापक आनन्दानुभूति की व्यंजना हुए संयोग भक्ति रस में डूबी मीरा का एक बहुत ही प्रसिद्ध पद है–

जोसीड़ा ने लाख बधाई रे अब घर आये स्याम।
आजि आनंद उँमगि भयो हैं, जीव लहै सुख धाम।।
पाँच सखी मिलि पीव परसि के आनंद ठांमू ठाम।।
बिसरि गई दुख. निरखि पियां कूं सुफल मनोरथ काम।
मीराँ के सुखसागर स्वामी, भवन गवन कियो राम।।[24]

इस प्रकार मीरा के पदों से हमें यह ज्ञात होता है कि मीरा के अनुसार उनका और श्रीकृष्ण का प्रेम इस जनम का ही नहीं का ही नहीं है अपितु वे जन्म–
जन्मान्तरों से इस बंधन में बंधे हुए हैं। संयोग का गीत गाते–गाते मीरा विरहमयी हो उठती है। मीरा के श्रृंगार वर्णन में संयोग और वियोग के भाव एक–दूसरे से गुँथे हुए हैं।

मीरा का विरह वर्णन–

भक्ति श्रृंगार में संयोग की स्थिति अल्पकालीन होती है। क्योंकि देह के रहते साधक और परमात्मा (परम ब्रह्म) का मिलन क्षणिक अनुभूतियों वाला होता है। अविनाशी प्रियतम् का सम्पूर्ण मिलन तो देहत्याग के बाद ही सम्भव है । मीरा की माधुर्य भक्ति ब्रजमंडल के अन्य भक्त – कवियों से सर्वथा निराली व भिन्न है । ''मीरा का वियोग कल्पना जन्य अथवा भावतिरेक की उपज नहीं है बल्कि यह उनके जीवन संघर्षो से निःसृत है। आँसू मीरा के जीवन का सत्य यहीं आँसू उनकी वेदना के प्रतीक हैं।''[25] मीरा के विरह वेदना के जो पद उनमें हृदय द्रावक वेदना की अभिव्यक्ति है वह अनिर्वचनीय है। विरहकाल में मीरा पपीहे को कहती है–

पपीया रे पीवकी बानी न बोलि।
सुनि पावेगी बिरहनि रालैली पाँखाँ मरोड़ ।
चोंच कटाऊ पपीया रे, ऊपर कालो रे लोंण ।
पीव हमारे मैं पीवकी रे, तू पीव कहै सो कौंण । ।[26]

मीरा ने अपने विरह जन्य पदों में बारहमासा पद्धति का भी प्रयोग किया है –

पिया मोहि दरसण दीजै हो।
बेर बेर मैं टेरत टेरत हूँ, अहे कृपा (किरपा) कीजे हो।
जेठ महीने जब बिना, पंछी दुख होई हो।
मोर असाढ़ा कुरलंहे, घन चात्रक सोई हो।
सावण में झड़ लागियो, सखि तीजाँ खेलै हो।
भादरवै नदियाँ बहै, दूरी जिन मेलै हो।
सीप स्वाति ही झेलती, आसोजां सोई हो।
देव काती में पूजहे, मेरे तुम होई हो।
मंगसर ठंढ बहोत पड़े, मोहि बेगि सम्हालो हो।
पोस महीं पाला घणां, अबहीं तुम न्हालो हो।
माह महीं बसंत पंचमी, फागां सब गावै हो।
फागुण फागां खेल हैं, वणराइ जरावै हो।
चौत चित्त में ऊंपजी, दरसण तुम दीजै हो।
वैसाख वणराइ फूलवै, कोइल कुरलीजै जोसी हो।
मीराँ बिरहणि ब्याकुती, दरसण कब होसी हो।।[27]

विरह की विभिन्न दशाओं का वर्णन –

विप्रलम्भ शृंगार (वियोग) की चार स्थितियाँ मानी गयी है दृ पूर्वराग,
मान, प्रवास, अभिशाप या करूणा।

(1) पूर्वराग –

मिलन से प्रथम, प्रत्यक्ष, श्रवण, चित्र या स्वप्न दर्शन से जो प्रीति होती
है वह पूर्वराग है। मीरा के काव्य में पूर्वराग के पर्याप्त पद मिलते हैं । पूर्वराग
की दस दशाएँ हैं – अभिलाषा, स्मृति, चिन्ता, गुण–कथन, उद्वेग, प्रताप, उन्माद,

व्याधि, जड़ता, मरण। मीरा के काव्य में इन सभी स्थितियों का विवरण मिलता है। पूर्वराग का एक पद प्रस्तुत है –

हे री मैं तो दरद दिवानी, मेरा दरद न जाने कोय।
घायल की गत घायल जाने, के जिन घायल होय।
मीराँ के प्रभु पीर मिटेगी, वैद साँवलिया होय।[28]

(2) मान–

मान वियोग श्रृंगार की द्वितीय अवस्था है। इसे क्षणिक वियोग भी कहते ।श जब प्रिय अथवा प्रियतमा किसी मद, ईर्ष्या, या मानापमान के कारण थोड़े समय के लिए परस्पर विमुख हो जाते हैं तब मान की स्थिति उत्पन्न हो जाती है । यद्यपि मीरा के काव्य में मान वियोग श्रृंगार का अभाव है किन्तु कुछ पदों में मीरां कृष्ण को मिजाजी (घमण्डी) कहकर अवश्य पुकारती है –

इतनूं कांई छै मिजाज म्हारै मिंदर आता।
थांने इंतनूं कांई छै मिजाज।
तन मन धन सब अरपन कीनूं छाड़ी छै कुल की लाज।
दो कुल त्याग भई बैरागण, आप मिलण की लाग।
मीराँ के प्रभु कब रे मिलोगे, कुबण्या आई कांई याद।।[29]

(3) प्रवास–

जब प्रिय कहीं अन्यंत्र चला जाए और प्रेमी के लिए एक – एक क्षण भारी हो उठे, कष्टदायक हो । वह वियोग की चरमावस्था है। इस प्रवासजन्य वियोग को काव्यशास्त्रियों ने भी वास्तविक विरह और श्रृंगार का सर्वाधिक मार्मिक स्वरूप बताया है। इस प्रवासजन्य वियोग के पदों का मीरा के काव्य में अधिकता है।

प्रवास की नौ दशाएँ है अरूचि, संताप, अंगो का असौष्ठव, अधीरता, पांडुता, उन्माद, अनावलम्बता, तन्मयता, दुर्बलता । प्रवास का पद –

प्रभुजी थे कहाँ गया नेहड़ो लगाय।
छोड़ गया विश्वास सगाती, प्रेम की बाती बराय।
विरह समद में छोड़ गया छो, नेहकि नाव चलाय।
मीराँ के प्रभु कबेर मिलोगे, तुम बिना रहा न जाय।।[30]

(4) अभिशाप या करूणा–

करूण विप्रलम्भ में प्रेमी जोड़े में से किसी एक का अंत हो जाता है। जो पक्ष इस संसार में रहता है उसे प्रियवियोग की मर्मान्तक पीड़ा वहन करनी पड़ती है। काव्यशास्त्रियों के अनुसार करूण वियोग का भक्ति काव्य में कोई स्थान नहीं होता । मीरा के गिरधर अविनाशी है इसलिए अभिशाप वियोग श्रृंगार का मीरा के काव्य में प्रयोग नहीं किया गया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मीरा का विरह वर्णन परम्परागत होते हुए भी परम्परागत नहीं है । क्योंकि मीरा ने इन पदों की रचना सप्रयास नहीं की है अपितु यह तो एक विरहिणी की व्याकुल आत्मा का आर्त्तनाद है।

(3) आत्मसमर्पण –

विरह का अंतिम किनारा आत्मसमर्पण है । जब विरहिणी अपने प्रियतम के बिना रह नहीं सकती तो वह आत्मसमर्पण करना उसकी मजबूरी है। विरहिणी सोचती है किसी भी तरह प्रियतम मुझे अपना लें और मैं हर समय उसके पक्ष रह सकू।

मीरा ने भी अपने आपको पूर्णतया कृष्ण के प्रति ’ समर्पित कर दिया है। इस समर्पण भावना के कारण मीरा अपने प्रियतम् (आराध्य) कृष्ण की सेविका तक बनने को तैयार हैं, वे कहती है –

म्हांने चाकर राखे जी, साँवरिया म्हाने चाकर राखे जी।
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ, नित उठि दरसन पास्यूँ।
चाकरी में दरसन पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची।
भाव भगति जागीरी पाऊँ, तीनूँ बाताँ सरसी ।। [31]

मीरा कृष्ण को पाने के लिए कोई भी रूप धारण करने को तैयार है, वे कहती हैं –

चालाँ वाही देस प्रीतम, चालाँ वाही देस ।
कहो कसूमल साड़ी रँगावाँ, कहो तो भगवाँ भेस।

कहो तो मोतियन माँग भरावाँ, कहो छिटकावाँ केस।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, सुणज्यो बिड़द नरेस ।। [32]

निष्कर्ष –

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हम यह कह सकते हैं कि भक्त शिरोमणि मीरा की भक्ति प्रेम भाव की थी और उनके प्रेम का आलम्बन उनके गिरधर नागर श्रीकृष्ण थे। अपनी इस माधुर्य भक्ति में रूप वर्णन, श्रृंगार वर्णन तथा आत्मसमर्पण तीनों तत्त्वों का समावेश कर दिया है। मीरा के काव्य में विरह वेदना की ऐसी गंभीरता मिलती है, जो बरबस ही पाठक के हृदय को भावोद्वेलित करने में समर्थ है। लौकिक प्रेम की वासना के अभाव उनका वेदना स्वरूप और भी अधिक दिव्य और पवित्र हो गया है।

संदर्भ सूची

(1) भक्ति काव्य की परम्परा में मीराँ / डॉ. रमा भार्गवः पृ. 102
(2) मीरां वृहत्पदावली (भाग–1)/सं. हरिनारायण पुरोहित/पृ. 235/पद सं.
(3) मीरा स्मृति ग्रंथ/डाकोर की प्रति से/पृ.सं. 30
(4) मीरांबाई/डॉ. सी. एल. प्रभात /पृ. 375/(1965वां संस्करण)
(5) मीरांबाई की पदावली/परशुराम चतुर्वेदी/पद सं. 33
(6) मीरां वृहत् पदावली (भाग–1)/हरिनारायण पुरोहित/पृ. 9/पदं सं. 16
(7) मीरांबाई की पदावली ध परशुराम चतुर्वेदी / पद सं. 31
(8) मीरां वृहत् पदावली (भाग–1)/हरिनारायण पुरोहित/पृ. 247/पद सं. 505
(9) नारद – भक्ति सूत्र / सूत्र सं. 82
(10) मीराबाई की पदावली / आ. परशुराम चतुर्वेदी / पृ. 99 / पद सं. 1
(11) श्रीमद्भागवत् सप्तम स्कन्ध /अध्याय – 5 / श्लोक – 23
(12) मीरां वृहत् पदावली/भाग–1/ हरिनारायण पुरोहित/पृ. 202/पद सं. 425
(13) अष्ठछाप और वल्लभ सम्प्रदाय (द्वितीय भाग)/डॉ. दीनदयालु गुप्त/ पृ. 543
(14) मीरां वृहत् पदावली (भाग – 1)/हरिनारायण पुरोहित/पृ. 179/पद स. 379
(15) मीराबाई की सम्पूर्ण पदावली/सं. रामकिशोर शर्मा, सुजीत कुमार शर्मा/पृ. 34
(16) मीरा का काव्य/ विश्वनाथ त्रिपाठी / पृ. 110
(17) मीरा का जीवन दर्शन /डॉ. राजेन्द्र सिंघवी के नेट पर उपलब्ध लेख द्वारा।
(18) मीरां – माधुरी / ब्रजरत्नदास/पद सं. 127
(19) मीराँ व्यक्तित्व और कृतित्व/पद्मावती शबनम/पृ. 261
(20) मरू मंदाकिनी मीरा/रतनलाल मिश्र/पृ.143/पद सं. 166
(21) मीरा का व्यक्तित्व और कृतित्व/प्रधान सं. संजय मल्होत्रा, सं. ओमू आनन्द सरस्वती, प्रो. सत्यनारायण समदानी/पृ. 164
(22) भक्ति काव्य की परम्परा में मीरा/डॉ. रमा भार्गव/पृ. 105
(23) मीराँबाई की पदावली/परशुराम चतुर्वेदी/पद सं. 20
(24) मीरा वृहत् पदावली (भाग–1) हरिनारायण पुरोहित/पृ. 86/पद सं. 178
(25) स्त्री चेतना और मीरा का काव्य/पुनम कुमारी/पृ. 104
(26) मीरां वृहत् पदावली (भाग–1) हरिनारायण पुरोहित/पृ. 135/पद सं. 282
(27) वहीं/पृ. 141/पद सं. 297
(28) मीरां वृहत् पदावली (भाग–2)/कल्याण सिंह शेखावत/पद सं. 212
(29) मीरां वृहत् पदावली (भाग–1) हरिनारायण पुरोहित/पृ. 19/पद सं. 40
(30) वही –/पृ. 129/पद सं. 270
(31) वहीं –/पृ. 189/ पद सं. 398
(32) मीराँबाई की पदावली/परशुराम चतुर्वेदी/पृ. 53/पद सं. 153

संदर्भ ग्रंथ–सूची

(1) अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय (द्वितीय भाग) –– – डॉ. दीनदयालु गुप्त, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, तृतीय संस्करण, सन् 2000 ई.।
(2) नारद भक्ति सूत्र सम्पादक नंदलाल सिन्हा, ऑरिएण्ट पब्लिशर्स, दिल्ली, सन् 1917 ई.।
(3) भक्ति काव्य की परम्परा में मीरां – डॉ. रमा भार्गव, कुसुनाञ्जलि

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

प्रकाशन, जोधपुर (राज.) प्रथम संस्करण, 1990 ई.।
(4) मरुमंदाकिनी मीरा – रतनलाल मिश्र, साहित्यागार, जयपुर, संस्करण– 2010 ई.।
(5) मीरा का काव्य– विश्वनाथ त्रिपाठी, वाणी प्रकाशनं, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1989 ई. तथा द्वितीय संस्करण–1998. ई.।
(6) मीरा का व्यक्तित्व और कृतित्व–प्रधान संपादक संजय मल्होत्रा, सम्पादक स्वामी (डॉ.) ओम् आनन्द सरस्वती, प्रो. सत्यनारायण समदानी, मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौडगढ़, प्रकाशन–1998 ई.।
(7) मीरांबाई – सी.एल. प्रभात, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई 4, सन् 1965 ई.।
(8) मीराँबाई की पदावली सम्पादक परशुराम चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, सन् 2001 ई.
(9) मीरां बृहत् पदावली (भाग–1) सम्पादक हरिनारायण पुरोहित, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, तृतीय संस्करण– 2006 ई.।
(10) मीराँ बृहत् पदावली (भाग–2) सम्पादक कल्याणसिंह शेखावत, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, सन् 1975 ई.।
(11) मीरां माधुरी– बाबू ब्रजरत्नदास, हिन्दी साहित्य कुटीर, काशी, सं.– 2005 ई.।
(12) मीराबाई की सम्पूर्ण पदावली सम्पादक डॉ. रामकिशोर शर्मा एवं डॉ. सुजीत कुमार शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण– 2013 ई.।
(13) मीरां व्यक्तित्व एवं कृतित्व – पद्मावती शशबनमश, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, सन– 1973 ई.
(14) मीरां स्मृति ग्रंथ – बंगीय हिन्दी परिषद्, मार्डन आर्ट प्रेस, कलकत्ता, सं–2006 ई.।
(15) श्री मद्भागवत–सुधा–सागर प्रकाशक – गीताप्रेस गोरखपुर, संवत्– 2068 वि.।
(16) स्त्री चेतना और मीरा का काव्य पुनम कुमारी, अनामिका पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लि., नई दिल्ली, संस्करण –प्रथम 2009 ई.।